Dr. Kaushal Kumar
Economics - 1
B. A. I

अर्थशास्त्र की प्रकृति और सीमाओं का वर्णन करें।

Ans:- अर्थशास्त्र के स्वभाव के अन्तर्गत इस बात का अध्ययन किया जाता है, कि अर्थशास्त्र विज्ञान है, या कला या फिर दोनों। परन्तु यहाँ प्रश्न यह है, कि अर्थशास्त्र विज्ञान या कला, विज्ञान किसे कहते है और कला की ~~परिभाषा~~ परिभाषा क्या है,

विज्ञान किसी भी विषय के क्रमबद्ध ज्ञान को कहा जाता है। दूसरे शब्दों हम कह सकते है कि विज्ञान ज्ञान का वह सुव्यवस्थित भाग है, जिसका अध्ययन परिणामों की जाँच, निरीक्षण एवं प्रयोग के द्वारा किया जाता है। प्रो॰ रॉबिन्स के अनुसार- यह सामान्य सिद्धान्तों, नियमों, प्रस्थापनाओं या कानूनों वह अंग है, जो कारण एवं कार्य के कारण विषय सम्बन्ध को चित्रित करता है। इस दृष्टि से अर्थशास्त्र विज्ञान प्रतीत होता है क्योंकि यह ऐसे सामान्य सिद्धान्तों का निरूपण करते है, जो कार्य- कारण सम्बन्ध स्थापित करते है जिस प्रकार भौतिक शास्त्र एवं रसायन शास्त्र विज्ञान की नियमो की सहायता से बताया जाता है कि एक विशेष क्रिया परिणाम निकलेगा, ठीक उसी प्रकार अर्थशास्त्र में भी यह बताना सम्भव है जैसे- रसायन विज्ञान यह बताता है कि हाइड्रोजन के दो भाग एवं ऑक्सीजन के एक भाग मिलने से जल निर्माण होता है, ठीक उसी प्रकार अर्थशास्त्र में उत्पादन का नियम यह बताता है, कि अन्य साधनों को स्थिर रखकर यदि किसी एक साधन की मात्रा में वृद्धि लायी जाय, तो एक सीमा के बाद उत्पादन में घटती हुई दर से वृद्धि होती है, यहाँ साधनों में वृद्धि ~~वृद्धि~~ लाना कारण और उत्पादन में घटती हुई दर से वृद्धि उसका परिणाम है।

कुछ अर्थशास्त्रियों की यह मान्यता है कि अर्थशास्त्र के नियमों में व्यापक सच्चाई नहीं होती है। इनमें परिणामों की संख्यात्मक माप सम्भव नहीं है। इस प्रकार अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु मनुष्य है जिसकी इच्छाओं और प्रेरणाओं को भौतिक माप सही ढंग से नहीं की जा सकती है। [illegible] आधार पर उसके

सीमा के बाद उत्पादन में घटती हुई दर से वृद्धि होती है। यहाँ साधनों में वृद्धि वृद्धि लाना कारण और उत्पादन में घटती हुई दर से वृद्धि उसका परिणाम है।

कुछ अर्थशास्त्रियों की यह मान्यता है अर्थ शास्त्र के नियमों में व्यापक सच्चाई नहीं होती है। इन परिणामों की संख्यात्मक माप सम्भव नहीं है। इस प्रकार अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु मनुष्य है जिसकी इच्छाओं और प्रेरणाओं को भौतिक माप सही ढंग से नहीं की जा सकती इतना ही नहीं मनुष्य के आचरण पर उसके सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण एवं नैतिक मान्यताओं का प्रभाव पड़ता है। अतः मनुष्यों के व्यवहार में पाये गये पूर्वानुमान गलत हो सकता है।

विज्ञान भी हो सकता है।
(i) वास्तविक विज्ञान (positive Science) तथा
(ii) आदर्श विज्ञान (Normative science)

वास्तविक विज्ञान :- वास्तविक विज्ञान केवल वस्तु-स्थिति का अध्ययन करता है यह केवल यह बतलाता है कि 'वस्तु स्थिति' क्या है? what is the situation? वास्तविक विज्ञान यह बतलाता है " कि अमुक वस्तु ठीक है या नहीं "। साथ ही साथ हमारे समक्ष कोई आदर्श भी नहीं उपस्थित करता है। उदाहरण के लिए वास्तविक विज्ञान यह बतलाता है कि विष-पान से मृत्यु हो जाती है। इसका कार्य यह कहना नहीं है कि विष बुरा है या भला।

आदर्श विज्ञान :- इसके विपरीत आदर्श विज्ञान मानव जीवन के लिए आदर्श उपस्थित करता है। इसका कार्य उन उद्देश्यों अथवा आदर्शों को बतलाना है जिनकी प्राप्ति के लिए मनुष्य प्रयत्नशील रहता है। इस प्रकार इसका सम्बंध क्या होना चाहिए? what ought to be? आदर्श विज्ञान उचित एवं अनुचित में अन्तर बतलाता है।

अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान के रूप में (Economics as a positive Science) :- वास्तविक विज्ञान कारण एवं परिणाम में सम्बंध स्थापित करता है जिसके आधार पर नियम अथवा सिद्धान्तों का निरूपण किया जाता है।

अर्थशास्त्र एक आदर्श विज्ञान के रूप में Economics is a Normative Science :- अर्थशास्त्र आदर्श विज्ञान भी है। आदर्श विज्ञान मानव जीवन के लिए आदर्श उपस्थित करता है तथा उचित तथा अनुचित में अन्तर बतलाता है। इस रूप में अर्थशास्त्र मानव आचरण के आर्थिक पहलू को दृष्टिकोण में रखते हुए आर्थिक आदर्शों का प्रतिपादन करता है जिससे कि समाज का अधिकतम आर्थिक कल्याण हो सके। उदाहरण के लिए :- ब्याज की दर क्या होनी चाहिए, - मूल्य मजदूरी की दर क्या होनी चाहिए कृषि-सुधार का तरीका क्या होना चाहिए? इनसे स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र एक आदर्श विज्ञान भी है।

अर्थशास्त्र वास्तविक एवं आदर्शवादी दोनों ही है

Economics is both positive and a normative Science - अर्थशास्त्रियों में मतभेद रहा है कि अर्थशास्त्र वास्तविक विज्ञान है या आदर्शवादी विज्ञान या फिर दोनों ही है। प्राचीन अर्थशास्त्रियों के अनुसार आर्थिक व्यवस्था की सफलता या असफलता की आलोचना करना अर्थशास्त्री का